





वार्जिकं केन पुन्ये लभते राज्यं कथ  
र्थं केन को पुन्ये ले सन अनक २ इ  
ले हाति घोडा गाई भूमि वा प्रा भ  
पान को लायक उमरा धुलो २ भारा भ  
काल छेउ वित्ति गन्वा ॥ ३ ॥ श्री भगवान्

373  
Bhamra-10/5/21  
+ 8/1/2025

॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥



तेहम भूमिदानंगजवाजिकं अन्नदानेलाभते राज्यं सुन  
 होपाराडनन्दन ॥ ॥ अस्यार्थ ॥ कोहिमनुष्यले पर्वजन्म  
 हा सनदानगयाको पुण्यले सोवर्ग अन्यक अनेकरत्नची  
 जव लुपायो भुमीदानगयाको पुण्यले ग्रामको नायकने  
 शक्ति घोर पायो अन्नदानगयाको पुण्यले राज्य पाये ननि

आशा अरु कधि  
 ASHA ARCHIVES

578

I

श्रीकृष्णले अर्जुनला सुनाया ॥ ६ ॥ अर्जुनउवाच ॥ केन पापे  
 नश्रीमृत्यु केन पाप पुत्रनाशनम् केन पापे भवे निष्ठु कथं  
 कल्पजनादन ॥ ॥ अस्यार्थ ॥ क्याको पापले आप्राप्ती मृत्यु न  
 यो क्याको पापले पुत्रनाश भयो क्याको पापले दुःखी नयो  
 भनि श्रीकृष्णके अर्जुनले विनिगया ॥ ५ ॥ श्रीभगवानु



वाच॥ रिगापापेनस्त्रीमृत्युः खानपापेनंपुत्रनासनं॥ मनभ  
गेभवेहीजु सुनहीपाराडनन्दन॥ ॥अस्यार्थ॥ पूर्वजन्ममा  
अर्काकोरीननतिन्याकोपापले आत्रास्त्रीमृत्युभयो सो  
कसंतापभयो कुणमात्राकोपापले शान्ताननाभयो  
अन्नचोत्राकोपापले भिक्षुकभयो भनि श्रीहृदये भुजु

नलाईआतागर्हभया॥ ६॥ अर्जुनोवाच॥ केनपुन्येविधि  
त्रस्य केनपुन्येसुपात्रकर॥ केनपुण्येमहाभोगी कथंत्वं  
स्यजनाधन॥ ॥अस्यार्थ॥ अर्जुनलेविधिगन्धो कथापुण्य  
लेविचित्ररूपभयो कथापुन्यले सुपात्रभयो कथापुन्यले  
महासुखीभयो भनि अर्जुनले श्रीहृदये विनिगन्धो॥ ७॥



श्रीभगवानुवाच॥ मिस्तान्नदानविचित्रस्मकोदाने सुपाप  
कर्म॥ सर्वपादानसदाभोगी सुनरोपासननन्दन॥ ॥ अथ  
॥ समस्तदानगम्याको पुन्यले विचित्ररूपभयो गोदानगम्या  
को पुण्यले सुपात्रभयो त्वात्दानगम्याको पुन्यले महासु  
खभोगभयो भनि श्रीकृष्णले ॥ अहागर्दाभया ॥ ८ ॥ अजुनेष्टा

च॥ केन पापिनरकं जाति केन पापे अपुत्रकर्म केन पाजे  
सदरोगी कथं कल्पजनाईन ॥ ॥ अथार्थ ॥ हे परमेश्वर श्रीकृ  
ष्णजी कथापापलेन कवास भयो कथापापले पुत्रनभै अपुता  
भयो कथापापले सदरोगी भयो भनि श्रीकृष्णले ॥ अजुनेष्टा  
तिगम्या ॥ ९ ॥ श्रीभगवोवाच॥ कन्यादानगर्हति ब्रह्मक्षत्रियभ



पुत्रकर्म॥ देवनिन्द्या भवे रोगी। मुनहो पाराड नन्दन॥ अस्यार्थ॥  
हे पाराड राजा का छोरा कया अर्थ लि भयो भन्या कन्या विधिसित  
दान गर्नु सक्या नर्क वास चाहि दैन ब्राह्मणाला ई दोहो गत्या  
को पापले। पुत्र न भै अपुता भयो देवता निन्द्या गन्या को पा  
पले। सदा कार रोगी भयो भनि श्री कृष्णले अर्जुनला ई सुना

या॥ १०॥ भर्जुन उवाच॥ केन पापे भवे बालु केन पापे नखा  
नकर्म केन पापे न जन्मु कं कथं कस्य जना दत्त॥ ॥ अ॥  
स्यार्थ॥ हे परमेश्वर श्री कृष्णजी। इच्छ जन्म नहा कया गन्या को  
पापले बौलाहा भयो कया कारणाले कुप जन्म भयो कया पा  
पले जन्मु भयो भनि अर्जुनले श्री कृष्ण छे उ विनिगन्या॥ ११॥



श्रीभगवानोवाच॥ सुरापानभवे मंत्र व्येष्ट्यागमनत्वा न  
कस्य॥ असुखदनेन जन्मुर्कः सुनहो पाराडनन्दन॥ ॥ अस्या  
र्थ॥ हे पाराड पुत्र विना मंत्रले सुरापान घाया व्यापायले  
बौलाहा भयो व्येष्ट्यास्त्रीगमनगत्या कोटापले कुटाजना भयो  
आक्रामन असुखले दानगत्या कोटापले जन्मुभयो भानि श्रीकृ

ष्णले अर्जुनलाई सुनाया॥ १२॥ अर्जुनोवाच॥ केन पुन्ये ल  
भे विद्या केन पुन्ये धनाध्यकस्य केन पुन्ये लभे राज्यं कथं क  
स्य जनार्दन॥ ॥ अर्थ॥ क्या पुन्यले पडित भयो क्या पुन्य  
ले धनाध्य भयो क्या पुन्यले वज्रत राज्ये प्रायो भानि अर्जुन  
ले श्रीकृष्ण छेड विंतिगत्या॥ १३॥ श्रीभगवानोवाच॥ एव



जन्म भवे विद्या होमजज्ञधनध्वकर्म॥ वारानसी भवेत्तत्पुत्र  
न हो पाण्डनन्दन॥ ॥ अस्पार्थ ॥ सर्वजन्ममा शास्त्रविद्या दान  
गन्धार्कोपरायले पंडित भयो होमजज्ञगन्धार्को पुन्यले धन  
ध्वभयो कथा पुन्यले वज्रत राज्ञे भयो भनि ~~राजा जन्म भयो भनि~~  
~~श्री कृष्णले अर्जुन~~ राजा जन्म भयो भनि श्री कृष्णले अर्जुन

लाई सुनाया ॥ १४ ॥ अर्जुनोवाच ॥ केन भाग्ये भवे केन केन पा  
पेन मर्षता ॥ केन पापे भवे त्रनारी कथं कस्य जनाईन ॥ ॥  
अस्पार्थ ॥ कथा पुण्यले समस्त संग प्रीति गन्धो अह कथा पा  
पले मर्ष भयो कथा पापले त्वान्नि जन्म भयो भनि अर्जुनले  
श्री कृष्ण छेउ विनिगन्धा ॥ १५ ॥ श्री भगवानोवाच ॥ प्रतिव्रत



भवेत्तस्य संसार अवगारणं मूर्धस्य च महानारी मुन होषा  
गडनन्दन ॥ अस्यार्थ पद्वज्जन्म महा उपासक स्याको मुने  
ले समस्त लोक ले प्रीति गच्छन् नित्य संसार मा अवगार  
गन्पा को पाप ले मूर्धस्य त्ति जन्म भयो क्रोधी अज्ञानि  
पापात्मा भयो भनि श्री कृष्ण ले अर्जुन लाई सुनाया ॥ १६ ॥

शिव तत्त्व न जानामि किं दृशो शिरो श्चरं ॥ यादृश्व श्री महा  
देव तादृशो ह नमो नमः ॥ १७ ॥ ज्योति मात्र सदा निन्द नि  
र्मलं जानुष पिने ॥ नमो शिवाय शास्त्राय ब्रह्म ने लिङ्ग  
मूर्तरये ॥ १८ ॥ शिव शिवेति वीनिते यास्मरंति निते सखा  
जल भित्वा यथा पद्मं नरका डुडु रम्य ह ॥ १९ ॥ रामाय



रामभद्राय रामचन्द्ररघुनाथं ॥ नाथं श्रीरामचन्द्राय श्री  
ताया पतये नमः ॥ २० ॥ ॥ इति श्रीनारायण ॥ अर्जुनस  
न्वादे अर्जुनगीतासंन्यासः ॥ ॥ इति सम्यक् १९१४  
सालमिति चैत्र शुद्ध १३ ऐश्व ७ लिषिति मिदं श्रीलक्ष्मी  
नाथशर्मणा समाप्तितायं ॥ पठतिकोलावापेल

तुलको जितनारांछिपाकोपोशकहो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
३ नम श्रीगनेसाय नमो ॥ ॥ ७ मार्ग गजक्रनम  
तेजंगनगनेसः भुजाकैकं न सोत्रितधुर्मकै  
॥ ॥ गंलेहालमुताफलासोभयत



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यथा यथा ॥ उवाच ॥ कीदृशं पञ्चलीकृतं  
 विस्तारं कृतं ॥ ७ ॥ गर्तेन काष्ठं वा [सर्वं] सन्तु रीकृतं ॥ ८ ॥  
 इमान् सन्तु यथा गच्छेत् ॥ तदहं स प्रवक्ष्यामि ॥ आत्मा र  
 तं सदा गच्छेत् ॥ ९ ॥ पादुरांतु गोवीर्यं यस्तु गोवीर्यं कृतं ॥  
 इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥ १० ॥

५१॥ हेरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि

श्रीराम श्रीराम नारायण

अगुदेमुवांमनतका॥ उदमेपुमाज॥

श्रीभाकतीनाथ

श्रीगणेशाय नमः श्रीरत्ननाममन्त्रः

121567



ॐ नमो श्री भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॥ १ ॥ हो उवा  
 प ॥ वो ह्युपजलं कल दिव सर्व इस्म नी वारु ॥ ३ ॥  
 यत्प्रजसाह वीरः सार्वसर्ग नीर कृत ॥ १ ॥ श्रीपुर  
 हमा नस्तुः प्रख्याता इस्वी कृत ॥ तदहं सप्र वक्ष्या  
 मिः ज्ञातमारुध्या महा भवेत् ॥ ३ ॥ पादुर हो नु गो

ईजया यस्तु श्रवी कृत ॥ उरुभ्या देसवाल क्ष कृत  
 पैवज नारद ॥ ३ ॥ नाभस्तु भ्रष्टा तात्क्षः गुह  
 श्रीवामन ॥ ३ ॥ उद्वेपदवना भवः हरी प्राचाक्ष  
 तु ॥ ४ ॥ वानपात पासो लो वो ह्युः दक्षी नम इ सुद  
 प्राहो वासुदेव सवः हरी यनु कना दन ॥ ५ ॥ कथल



समुवालाहाकशवमुषमइत्ते॥ नार्दवक  
रयोलास्यः होषोकेः वनासीकेः॥ ६॥ तीत्रोना  
रायनोलक्षः लालागीगरुइवज॥ कपोलोके  
सर्वीलक्षः वेनामेऽनुरक्षम॥ ७॥ श्रीवत्सर्व  
गात्रेषुः रक्षोनेपुरुषोत्तम॥ पुरुषेषुपुहकाक्ष

आग्नीयाश्चैविरतथाः दृष्टेनै गारसीहैवः नै  
दन्पातुनामेऽपुरुषोत्तमावारुन्यावायुव्यापानवा  
सर्प॥ ८॥ गहावैरुषुवरुः ससमिसातमाहोसा  
पालेषुगहालक्षः आगामेषुसुदरमत॥ ९॥ सगोव  
सगत्रेषुः प्रवोक्ताकोष्णपतलपलवोम्नाहैवी



परममहीनेले॥१०॥ एजकारपथेचोरेः संग्रामे  
सत्रसकलेः साक्षीभुजैवः व्याघ्रः वैवभया  
मथा॥११॥ अगदीदगवगनीपात्रेवः भुजग्रह  
पीतासन॥ साक्षीभुजैवः भुजप्रतभय  
मथा॥१२॥ रक्षोरक्षमासदेवः रक्षोरक्षमेहेश्वर॥

रक्षामुसर्वदेवानाः प्रज्ञावीचुमेहेश्वरः॥१३॥  
दिवारक्षामुसुजेरक्षामुवन्दमाः सदेवदेव  
गुर्वोक्षुसर्वथागोजनारदन॥१४॥ जलेरक्षामु  
लाहाः भलेरक्षामुवामन॥ अथवामनारसीहप  
सर्वपापमुकसर्व॥१५॥ कवचंवासुदेवस्यः पवथ



मो मुनी न स ॥ न भय न च दारिद्र्य सर्व व्याधि नी  
वारन ॥ १६ ॥ वीजा चोत्पत्ते वीज्य धन्या धी  
लभते वन ॥ कन्या चोत्पत्ते कन्या मोक्षमाप्नो  
लभते नती ॥ १७ ॥ आपुन लभते न भोज्या लभते  
सो ही ॥ कामा चोत्पत्ते कामा वी सुगुलो कसग

सती ॥ १८ ॥ भुञ्जामा न डजो वो ~~हं~~ हं : नाम कारं न  
वेष्टजा : न लभते कीला लो गा : स म्मा समे वजा म्म ह  
॥ १९ ॥ आदि हात्पाद्रु पत्ते वी हं हं ६ पा न मह भ्वर ॥  
मि वै भ्रा स म्मा नी त्या : व्या वि भृ मु वा वी र्जो त्म  
॥ २० ॥ गोरु ह सर फ ल पुण्या वा ज प्प य स मा च



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥  
जलवोष्ण धूलवोष्ण वीष्णु सर्वत्र स सतत के ॥  
पालामाला ठले दोष्णु सर्ववोष्णु मेहे जगत  
॥ १२ ॥ इति श्री प्रह्लाद जी महोपाध्याय वीष्णु पञ्च  
भाष्ये श्रीगुरुः



आम अरुवाथि

578

I

ASHA ARCHIVES











ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥  
सर्वभूतहितं विना न विद्यते ॥



[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 अथ श्रीनारायणस्तोत्रम् ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
~~॥ अथ श्री कृष्णार्चनम् ॥~~  
॥ अथ श्री कृष्णार्चनम् ॥  
॥ अथ श्री कृष्णार्चनम् ॥



[illegible][illegible]







॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

1256 1015

[illegible]







[illegible][illegible]







[illegible][illegible]











